International Journal of Academic Research and Development
ISSN: 2455-4197, Impact Factor: RJIF 5.22
www.academicsjournal.com
Volume 2; Issue 3; May 2017; Page No. 391-393

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में विष्णु प्रभाकर के उपन्यासों की उपादेयता

डॉ0 सुरसरि तरंग मिश्र

प्रवक्ता–हिन्दी, उ0प्र0 सैनिक स्कूल, लखनऊ, उत्तर प्रदेश, भारत।

प्रस्तावना

वर्तमान समाज जीवन की आपाधापी, टूटन, बिखराव एवं मूल्यों के स्थान पर भोगवादी वृत्तियों की ओर उन्मुख है। उसकी दिशा नैतिकता को सर्वोच्च स्थान पर रखने की जगह येन–केन प्रकारेण सफलता पाने की ओर ही है। ऐसे में समाज में स्थापित जीवन की शुचिता, त्याग, बलिदान, आत्मोत्सर्ग की भावना छिन्न–भिन्न होती नजर आ रही है। ऐसे समय हमारा साहित्य अपने आदर्श पात्रों द्वारा हमें एक नया मार्ग दिखाता है। जिसका अनुसरण कर हम व्यवस्थित ढंग से जीवन को आगे की ओर बढ़ा सकते हैं। और समाज में व्याप्त उद्वेलन को शांत कर सरल और सुखद तरीके से आगे बढ़ सकते हैं।

उद्देश्य

उपन्यास एक ऐसी आधुनिक साहित्य विधा है जिसमें लेखक व्यापक रूप से समाज की दैनिक घटनाओं का अर्थात् समाज के चहुंमुखी जीवन का ज्यों का त्यों चित्रण कर सकता है, जो काव्य या अन्य साहित्यिक विधाओं में संभव नहीं है। हिन्दी गद्य के भीष्म पितामह विष्णु प्रभाकर के विषय में यह विशेष रूप से उल्लेखनीय है कि वे हिन्दी के विख्यात साहित्यकार हैं। जिनकी रचनाधर्मिता पूरे देश में सराही जाती है। विष्णु जी की प्रतिभा बहुआयामी है, उनका सम्पूर्ण जीवन लेखकीय सर्जनात्मकता से परिपूर्ण है।

संख्या की दृष्टि से कम होने पर भी विष्णु प्रभाकर के उपन्यास कलात्मक उपलब्धि की दृष्टि में महत्वपूर्ण है। जिनकी मूल चेतना 'नारी' है। 'नारी' अतीत मे ही नही वरन् वर्तमान तथा भविष्य के लिए भी चिन्तन का एक उत्कृष्ट विषय है। इसलिए इनके उपन्यास आज भी प्रासंगिकता में अनुकूल ही हैं। विष्णु प्रभाकर के उपन्यास भारतीय संस्कृति के वाहक हैं, जिनको पढ़ना और अनुपालन करना हमारे लिए ही नहीं, बल्कि भावी पीढ़ी के लिए भी आवश्यक है। विष्णु प्रभाकर के उपन्यास देश–काल की सीमाओं को लांघ करके आगे बढ़ रहे हैं।

किसी भी साहित्य की प्रासंगिकता पर विचार करते समय हमें सर्वप्रथम यह देखना चाहिए कि वह साहित्य अपने युग के लिए कितना और कहाँ तक प्रासंगिक है। किसी काव्य की सार्थकता और प्रासंगिकता का प्रश्न उसके मानव–मूल्यों से सम्बन्ध रखता है। मूल्यों की पहचान गुणों के आधार पर अधिक न होकर यथार्थता और वास्तविकता के आधार पर ज्यादा महत्व रखती है, क्योंकि मूल्य जीवन के सौंदर्य में विकसित होता है। जिस साहित्य में महान मानवीय संवेदनाओं के स्पन्दनों की धड़कन जितनी एकाग्रता और एकनिष्ठता के साथ झंकृत होती है, वह उतना ही शाश्वत, यथार्थ और समयानुकूल बन जाता है। इस प्रकार का साहित्य ही सार्वकालिक, सार्वभौमिक, और सार्वदेशिक सत्य की अखण्डता का प्रतिरूप बन जाता है। साहित्यकार अपने वर्तमान युग की दुर्बलताओं तथा आवश्यकताओं का अध्ययन करता है, अतीत परम्परा के उपयोगी तत्वों तथा आदर्शों को स्वीकार करता है ओर सुखद भविष्य के स्वप्नलोक में विलीन होता है। इस प्रकार साहित्यकार जब त्रिकालदर्शी के रूप में कार्यरत होता है तब उसका वर्तमान जीवन उस समय की मानवीय समस्यओं से जुड़कर प्रासंगिक बनता है। उस वक्त, उसकी रचनाएं देश–काल की सीमाओं को लांघ करके आगे बढ़ती है और प्रासंगिक बनकर कालजयी बनती है।

मूर्धन्य साहित्यकार विष्णु प्रभाकर ने 'निशिकान्त', 'तट के बन्धन', 'स्वप्नमयी', दर्पण का व्यक्ति' 'कोई तो' 'अर्द्धनारीश्वर' एवं 'संकल्प' उपन्यास लिखे हैं। इनके उपन्यासों की मूल चेतना नारी है। नारी जीवन की विसंगतियों को दर्शाने का उद्देश्य लेकर इन्होंने उपन्यास साहित्य का सृजन किया है। इनके चरित्रों में मानव–मूल्यों की कई बातें दृष्टिगत होती है। इस आधुनिक युग में जीवन मूल्य तीव्र गति से परिवर्तित हो रहे हैं। समाज के क्षेत्र. में मूल्य क्रांति का स्वर मुखरित है। पुरातनता के प्रति आस्था का आग्रह बढ़ता जा रहा है। हमारी पुरानी परम्पराएं, मान्यताएं, आदर्श और मूल्य विघटित हो रहे हैं। इस कालक्रम में मानव–मूल्यों से भरपूर विष्णु प्रभाकर के उपन्यासों का अध्ययन बहुत जरूरी और आवश्यक सा हो गया है।

समाज में मानव का स्थान सर्वोपरि है। मानव को सच्चे अर्थ में मानव के रूप जानना, पहचानना और लोगों तक पहुँचाना मानव का कर्तव्य है। जब मानव अपने संकुचित स्वार्थ से ऊपर उठकर मानव–मात्र के प्रति और उससे भी आगे बढ़कर प्रकृति के हर जड़–चेतन के प्रति अपने को एकाकार करने की भावना रखता है तभी यह मानवतावाद संभव है। विष्णु प्रभाकर के सभी उपन्यासों में संप्रदायवाद से ऊपर उठी हुई मानवीय संवेदना हमें देखने को मिलती है। इनके उपन्यासों के अधिकतर पात्र संघर्ष करते हैं। जिनका संघर्ष मूलतः स्वयं के लिए न होकर किसी न किसी सामाजिक चेतना से अनुप्रमाणित है।

इस वैज्ञानिक युग में वसुदेव कुटुम्बकम की भावना लुप्त होती जा रही है। उसका मूल कारण अहम् की भावना हर व्यक्ति अपने आपको अपने धर्म को अपने विचारों को जितना महत्व देता है उतना और किसी को नही देता। इस अहम् की भावना के कारण धार्मिक सहिष्णुता का भाव लुप्त होता जा रहा है और धर्म के नाम पर आतंकवाद बढ़ता जा रहा है। इन्होंने अपने उपन्यासों में धार्मिक सहिष्णुता व साम्प्रदायिक सद्भाव पर बल दिया है। 'निशिकान्त' उपन्यास में 'कुमार' के घर मे हिन्दु–मुसलमानों की सभा चलती है। उस सभा में लोग हिन्दु–मुसलमानों के बीच एकता लाने की बाते करते हैं। उस समय देवदत्त हबीब से कहता है–आप ठीक कहते हैं। 'धर्म किसी से नफरत करना नही सिखाता यह तो कुछ लोगों का स्वार्थ है जो उन्हें लड़ाता रहा है।''[1] 'निशिकान्त' उपन्यास में नायक निशिकान्त ब्राह्मण युवक होने पर भी वह न्याय की ओर अडिग रहकर मुसलमानों का समर्थन करता है। 'अर्द्धनारीश्वर उपन्यास में मुसलमान लड़की शाहिदा सुमिता को 'भाभी' बोलकर संबोधित करती है और उसके घर के कामों में हिचहिचाते बिना हाथ बढ़ाती है।

बहते हुए खून को धर्म के नाम से बाँटने वाले लोगों के बीच इस प्रकार के चरित्रों का निर्माण समाज के लिए परमावश्यक है। इनके

उपन्यासों के सभी प्रधान पात्र धर्म का नाम लेकर मनुष्यों को नहीं बाँटते। हमारे देश में संयुक्त परिवार में रहकर बड़ों को आदर करना, उनकी देखभाल करना, अतिथि सत्कार की भावना, बच्चों का पालन पोषण आदि परिवार के दायित्वों को निभाना कर्तव्यों के रूप में माना जाता है। आजकल यह प्रणाली धीरे–धीरे समाप्त होती जा रही है। एकल परिवारों की अधिकता हो रही है। इनके उपन्यासों में परिवार से सम्बन्धित अनेक उपयोगी मूल्यों का अनुपालन होता है। 'निशिकान्त' उपन्यास की नायिका कमला, 'संकल्प' उपन्यास की सुमति आदि पति के देहान्त के बाद भी ससुराल में रहकर अपने दायित्वों को निभाती हैं। 'अर्द्धनारीश्वर' उपन्यास की सुमिता अपनी ननद को बचाने के लिए स्वयं के जीवन को दाव पर लगाती है। 'स्वप्नमयी' उपन्यास की अलका अपनी सास को संतुष्ट करने के प्रयत्न में स्वयं का बलिदान देती है। आज के युवा लोग स्वतंत्रता और आधुनिकता के नाम पर अपने दायित्वों से विलग होते जा रहे हैं। उनके लिए इन चरित्रों का निर्माण उदाहरण है।

आधुनिक नारी आज शिक्षा के बलबूते पर स्वतन्त्र चेतना, व्यक्तित्व सम्पन्न, आत्मनिर्भर बन गई हैं। उनकी अपेक्षाएं बदल गई हैं। वे समानता की माँग कर रही हैं। नारी स्वयं अपने जीवन का पथ निर्माण करना चाहती है। इस वैज्ञानिक युग में जब भी नारी समानता की बात करती है, आधिकतर लोगों का दृष्टिकोण यौन–नैतिकता को आधार बनाकर ही देखता है। इस संदर्भ में 'अर्द्धनारीश्वर' उपन्यास में नायिका सुमिता की ननद विभा कहती है–''नारी की स्वतन्त्र सत्ता का, नारी की सेक्स, इइमेज से कोई संबंध नहीं हे। उसका अर्थ है समान अधिकार, समान दायित्व, एक स्वस्थ समाज के निर्माण में दोनों समान रूप में भागीदार हैं।''[2]नारी को समान अधिकार न मिलने पर, शोषण होने पर, अवहेलना होने पर, नारी विद्रोह करने लगती है और पुरूष के खिलाफ आवाज उठाने लगती है। इसलिए 'नारी स्वतन्त्रता' का सच्चा अर्थ समझना हम सभी के लिए बहुत जरूरी है। नारी की स्वतन्त्रता सत्ता का अर्थ यह नहीं कि वह जो भी चाहे मनमानी करे। आजकल की युवतियां शिक्षित और आत्मनिर्भर होने के कारण उनको पूर्ण रूप से स्वतन्त्रता मिल गई है। वे उस स्वतन्त्रता का दुरूपयोग करने लगी हैं। आजकल के युवा वर्गों में संस्कार, संस्कृति, आचार–विचार की कमी देखने को मिलती है। इनके उपन्यासों में युवा वर्ग के मन में सुधार लाने की कोशिश की गई है। लेखक ने अपने चरित्रों के द्वारा युवाओं के मन में प्रेरणा भरी है।

इनके पात्र आधुनिकता के नाम पर नैतिकता को खोते नहीं। परिस्थितियां कितनी भी जटिल एवं कठिन और मजबूर होने पर भी नारी अपने चरित्र को सुरक्षित रख सकती है– इसका उदाहरण इनके उपन्यासों में हमें देखने को मिलता है। 'संकल्प' उपन्यास की नायिका सुमति अपने पति के देहान्त के बाद नौकरी करती है। विधवा होने के कारण उसे कार्यालय में बाधाएँ आती हैं। उसके उच्च अधिकारी 'बतरा' उसे होटल ले जाकर शराब पीने के लिए जबरदस्ती करते हैं। उस समय भी विचलित हुए बिना इस्तीफा देकर दृढ़ता से कहती है– ''मैं सब कुछ जानती हूँ और सब कुछ जानती थी, इसलिए तैयार होकर आई हूँ। मैं अब आपके साथ काम नहीं कर सकती। यह लीजिए मेरा इस्तीफा, मैं जा रही हूँ।''[3]

'कोई तो' उपन्यास में वर्तिका का नाम पूरी तरह से बिगड़ जाने के बावजूद भी वह समझौता किये बिना ईमानदारी का रास्ता अपनाती हैं। 'अर्द्धनारीश्वर' में अर्जित श्यामला की ओर आकर्षित होकर गलती करने के पश्चात् सुधार लेता है, उसी प्रकार अजित का बहनोई अनित्य भी अपनी गलती को स्वीकार कर लेता है, झूठा दिखावा नहीं करता। इस प्रकार नैतिकता का पाठ इनके सभी उपन्यासों में हमें देखने को मिलता है। इन्होंने नैतिकता का पाठ सिर्फ नारी को ही नहीं, पुरूष को भी पढ़ाया है। अनैतिकता का प्रभाव बढ़ते हुए इस युग में विष्णु प्रभाकर के उपन्यासों का अध्ययन हमारे लिए लाभदायक होगा।

नारी समय के अनुसार विकास पाना चाहती है और कभी कभी वह अपने उद्धार के लिए 'कोई तो' की प्रतीक्षा में रहती है। यह धारणा उचित नहीं है। इनके उपन्यासों के द्वारा यह संदेश देने का प्रयास किया गया है कि उन्हें अपनी अस्मिता की लड़ाई स्वयं लड़नी चाहिए। नारी को अपने आन्तरिक बल को पहचानकर दृढ़ता से आगे बढ़ना चाहिए। नारी की प्रगति में पुरूष का भी समान दायित्व होना चाहिए। इनके पुरूष पात्र नारी की प्रगति को देखकर ईर्ष्या नहीं करते, अपितु उनके कामों में हाथ बँटाते हैं। जब 'अर्द्धनारीश्वर' उपन्यास की सुमिता अमेरिका जाती है तब उसका पति अजित बच्चे को संभालता है। 'कोई तो' उपन्यास में नारायण वर्त्तिका के पूर्व–पीठिका के बारे में चिन्तित हुए बिना वर्तमान में उसके साथ मिलकर जीना चाहता है। इस प्रकार के पुरूष पात्रों के चरित्र चित्रण के द्वारा पाठकों के मन में प्रेरणा देना जरूरी है।

स्वातत्र्योत्तर युग में भी राष्ट्रीय चेतना को जगाना बहुत जरूरी है क्योंकि इस राष्ट्रीय भावना के कारण ही एकता की भावना बनाई जा सकती है। अगर यह भावना नहीं है तो पायी हुई स्वतन्त्रता भी छिन्न–भिन्न हो सकती है। इनका रचनाकाल स्वातत्र्योत्तर युग होने के कारण इनके उपन्यासों में राष्ट्रीय भावना की झलक हमें देखने को मिलती है। व्यक्तिगत स्वार्थ से अधिक देश को उन्नत समझने की भावना राष्ट्रीय चेतना का प्रथम चरण है।

'निशिकान्त' उपन्यास में राष्ट्रीय भावना का चरमोत्कर्ष मिलता है। नायक निशिकान्त देश के लिए मर मिटना चाहता है। 'तट के बन्धन' नामक उपन्यास में सत्येन्द्र देश की उन्नति के बारे में सोचता है– ''अपना देश स्वतन्त्र हो चुका है। हम पर उसके निर्माण का भार है। उसकी स्वतन्त्रता की रक्षा करने की भार है। दासता से मुक्ति पाने के लिए जितने बलिदान तुमने किये थे उससे कहीं अधिक बलिदान हमें अब करने होंगे। हम विदेशियों की निन्दा करते हैं पर वे अपने देश के लिए कितना कुछ करते हैं, यह नहीं जानते। अकेले, र्जिन वनों, वीरान प्रदेशों और अनजान व्यक्तियों के बीच रहते हैं। परिवार और जीवन की सुविधाओं की चिन्ता तक नहीं करते। उनका एकमात्र लक्ष्य होता है 'देश'।''[4] 'सकल' उपन्यास में मोनिका विदेश में रहने वाले लड़के के साथ विवाह कर अपना देश छोड़ना नहीं चाहती। राष्ट्रीय चेतना को जगानेवाले इन चरित्रों का ज्ञान हमारे लिए अत्यावश्यक है।

समाज का निर्माण स्त्री–पुरूष के सहयोग से ही होता है। दोनों एक दूसरे के पूरक हैं। हमारे आराध्यदेव 'अर्द्धनारीश्वर' है। किसी तरह के सामाजिक, वैदिक, धार्मिक कार्य बिना पत्नी के अधूरे रहते हैं। फिर भी हमारे यहाँ नारी की स्थिति दयनीय है। प्राचीनकाल में नारी अनपढ़ थी और पुरूषों पर निर्भर रहती थी, अतः वह पुरूषों के विचारों को स्वीकार करती थी। पर आज जमाना बदल गया है। इस काल में भी अगर पुरूष उन पुरातनपंथी विचारों से चिपका रहा तो उसका वैवाहिक जीवन नष्ट होने की सम्भावनाएँ हैं। जब तक स्वचिंतन एवं स्वबुद्धि नहीं होती तब तक कार्यों में पूर्णता, स्पष्टता एवं उत्कृष्टता को लाना कठिन हो जाता है। इसलिए स्त्री और पुरूष दोनों को एक दूसरे को समझने की कोशिश करनी चाहिए।

वैवाहिक जीवन में सफलता हेतु पति–पत्नी में वैचारिक समानता एक अनिवार्य तत्व है। कोई भी मनुष्य सौ प्रतिशत सर्वगुण संपन्न नहीं होता। हर व्यक्ति में त्रुटियाँ किसी न किसी प्रकार की होती है। उन्हें सुधारकर और परिवर्तन लाकर आगे बढ़ने में ही समझदारी है। इसलिए गलतियों को ढूँढ़ने के बजाय अच्छाइयों पर ध्यान देना चाहिए। दोनों को एक दूसरे की दुर्बलताओं के साथ स्वीकारने की कोशिश करनी चाहिए और एक दूसरे पर अधिकार चलाने का प्रयास नहीं करना चाहिए। इस विषय को लेखक ने 'अर्द्धनारीश्वर' उपन्यास की नायिका 'सुमिता' के माध्यम से देखा जा सकता है।

वह कहती है–''नर–नारी को न तो एक दूसरे में खो जाना है और न एक–दूसरे पर आरोपित करना है। बस अपना–अपना स्वतंत्र व्यक्तित्व बनाए रखते हुए एक दूसरे से जुड़ना है 'अर्द्धनारीश्वर' की तरह''[5]

खलील जिब्रान ने कहा है– ''हम एक–दूसरे का प्याला भरें, पर एक दूसरे का प्याला न पिएं।'' यह आदमी के परस्पर अस्तित्व को कबूल करने का दर्शन है। लेकिन आज ''मैं'' हावी हो गया। आदमी समझता है कि जो कुछ वह जानता है वही अंतिम सत्य है। जिसे वह मानता है, वही सर्वश्रेष्ठ है। अस्तित्व तथा मान्यताओं की लड़ाई यहीं से शुरू होती है और तनातनी शुरू होने लगती है। कोई वेद, बाइबिल या कुरान यह पाठ नहीं पढ़ाते। इस सोच के कारण भारतीय संस्कृति का सनातन मूल्य सहिष्णुता का विलोपन हो रहा है। विष्णु प्रभाकर ने अपने उपन्यासों के द्वारा इस तथ्य का प्रतिपादन किया है कि सहिष्णुता परिवार एवं समाज का मूल है।

विष्णु प्रभाकर के उपन्यासों के पात्र हरेक कठिन स्थिति को भी सहिष्णुता से अपने लक्ष्य में विजय पाते हैं। इसका बहुत बड़ा उदाहरण 'कोई तो' उपन्यास की वर्तिका है। वर्तिका धैर्य की मूर्ति है, दृढशीला और न्यायप्रिय है। 'वर्तिका' पर आरोप लगने पर भी वह काफी सहिष्णुता के साथ कठिनाइयों को सामना करके सफलता पाती है। 'तट के बन्धन' में नीलम की माँ मुसलमान के साथ पुनर्विवाह कर लेने के कारण उसे लोग वेश्या तक कहते हैं। नीलम और उसके भाई सत्येन्द्र को समाज में अनेक अपमानों को सहना पड़ता है। वे दोनों इन विषयों पर ध्यान दिये बिना सहिष्णुता के साथ परिश्रम करने के कारण समाज में ऊँचे स्थान पाते हैं। छोटी–छोटी बातों पर क्षण–क्षण में निराश होते मानवों के लिए, इस प्रकार के चरित्र चित्रण हमारे मन में उत्साह को बढ़ाते हैं। साहित्य का मुख्य लक्ष्य समाज का कल्याण है। जो रचना सामाजिक चेतना से भरपूर है सिर्फ वह रचना ही देशकाल की सीमाओं को लांघकर कालजयी साहित्य की पदवी प्राप्त कर सकती है। उस दृष्टि से देखें तो विष्णु प्रभाकर उपन्यास में राष्ट्रीय चेतना, राजनीतिक चेतना, व्यक्तिनिष्ठ चेतना, सामायिक चेतना, सांस्कृतिक चेतना, नारी चेतना, गाँधीवादी चेतना, नैतिक चेतना, धार्मिक चेतना, मानवीय चेतना आदि से भरपूर हैं। सामाजिक चेतना से भरपूर इनके उपन्यासों का अध्ययन, इस काल के लिए ही नहीं, अपितु भविष्य के लिए भी बहुत जरूरी एवं अत्यंत आवश्यक है।

हमें भावुकता से निर्णय न लेकर बुद्धि और हृदयगत भावनाओं में सन्तुलन बनाकर रखना चाहिए। किसी भी कार्य को सुव्यस्थित ढंग से करने पर हमारे कर्म उदात्त रूप धारण कर सकते हैं और हम सफलता पा सकते हैं– इस विषय को लेखक ने अपने उपन्यासों के चरित्रों के द्वारा साबित किया है। दुःख के समय पूरी तरह से टूट जाना मानव का स्वभाव है लेकिन उस क्षणों से बाहर आकर, संभालकर जीवन में आगे बढ़ना हमारे लिए बहुत जरूरी है। ''संकल्प'' उपन्यास में सुमति पति के अकस्मात् मृत्यु से टूट जाने के बावजूद भी अपने दायित्वों को समझकर अपने आप को संभाल लेती है। इसलिए ही उसे अपने बेटे को इंजिनियर बनाना, ननद के लिए सुखमय वैवाहिक जीवन का प्रबंध करना, ससुर की देखभाल आदि संभव हुआ। 'निशिकान्त' की कमला नर्स की नौकरी करना चाहने पर उसकी पड़ोसी चाची उसे वेश्या तक कहती है। कमला इन विषयों से टूटती नहीं बल्कि आगे बढ़ती है। इस वर्तमान युग में भी नारी के चरित्र पर झूठा आरोप लगाना, अपमानित करना, शोषण करना आदि कार्य चल रहे हैं। इसलिए इस प्रकार के शोषणों से टूटे बिना आगे बढ़ने की प्रेरणा इनके उपन्यासों में हमें देखने को मिलती है जो आज के लिए सर्वाधिक महत्वपूर्ण है।

आजकल अधिकार लोग अपने सामाजिक जीवन में सफलता पाकर, व्यक्तिगत जीवन को खो बैठते है। सच में यह सफलता जरूरी है। इनके पात्र सामाजिक, व्यक्तिगत और पारिवारिक जीवन में भी सफलता पाते है। यह हमारे लिए बहुत जरूरी सीख है। मानव के मन में अनेक कुठित भाव छिपे रहते हैं, उनके कारण मानव खोखली प्रतिष्ठा का निर्माण करके उसमें जीने लगाता है सच में बाहरी दिखावे से स्वस्थ एवं श्रेष्ठ समाज का निर्माण असंभव है। इनके उपन्यासों के पात्र झूठा दिखावा नही करते, वे सिर्फ विचारों मे ही नहीं, कार्यों में भी समय के अनुसार परिवर्तन लाने की कोशिश करते हैं। इस प्रकार का प्रयत्न करके ही समाज का वास्तविक उद्धार संभव है।

'कोई तो' उपन्यास में लेखक प्रभाव–उनकी पत्नी, 'अर्द्धनारीश्वर' में सुमिता–अजित, 'तट के बन्धन' उपन्यास में शशि–सुनील आदि पति–पत्नी होने के बावजूद भी एक दूसरे के साथ मैत्रीपूर्ण व्यवहार करते हैं। वे एक दूसरे की परिस्थितियों को समझने की कोशिश करते हैं। इसके लिए उनका दाम्पत्य जीवन सफल होता है। छोटे–छोटे विषयों के लिए भी अदालत जाने वाले दम्पत्तियों के लिये विष्णु प्रभाकर के पात्र अनुकरणीय हैं। इनके उपन्यासों में नारी के अनेक रूप होने पर भी 'माँ' के रूप को महत्व अधिक दिया गया है। इनके उपन्यासों का अध्ययन खासकर भारतीय नारियों के लिए एक मूल्यपरक मार्ग प्रदान करने वाला है।

निष्कर्ष

विष्णु प्रभाकर के उपन्यासों में वर्णित पात्रों के गहन अनुशीलन से अध्येता इस निष्कर्ष पर पहुँचता है कि इनके उपन्यासों के चरित्रों में ईमानदारी, मेहनत, साहस, निडरता, कर्मठता, आदर कर्तव्य के प्रति जागरूकता, अधिकारों, के चिंतन क्षमता, परोपकारता, परिस्थितियों के अनुसार समझौता करने को हम अनुभव कर सकते हैं। इनके चरित्रों मे अनगिनत मानव मूल्यों की बातों की भरमार है। सच में कहे तो विष्णु प्रभाकर के उपन्यास भारतीय संस्कृति के वाहक हैं, जिनका पठना और अनुपालन हमारे लिए ही नहीं, बल्कि भावी पीढ़ी के लिए नई दिशा प्रदान करने वाला है इसलिए विष्णु प्रभाकर वर्तमान परिप्रेक्ष्य में अत्यधिक प्रासंगिक एवं समीचीन हैं और रहेंगे भी।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. निशिकान्त– विष्णु प्रभाकर, भारतीय साहित्य संग्रह प्रकाशन वर्ष 2009, पृ0 99।
2. अर्द्धनारीश्वर– विष्णु प्रभाकर, शब्दकार प्रकाशन नई दिल्ली प्रथम संस्करण, पृ0 331।
3. संकल्प– विष्णु प्रभाकर, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली प्रथम संस्करण, पृ0 211।
4. तट के बन्धन– विष्णु प्रभाकर, सस्ता साहित्य मण्डल नई दिल्ली प्रथम संस्करण, पृ0 132।
5. अर्द्धनारीश्वर– विष्णु प्रभाकर शब्दकार प्रकाशन नई दिल्ली, पृ0 64।